जयशंकर प्रसाद

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» जयशंकर प्रसाद: जीवन परिचय

प्रश्न 1 (आसान). जयशंकर प्रसाद जी का जन्म कहाँ हुआ था?
उत्तर – काशी में

प्रश्न 2 (आसान). उन्होंने कितने कक्षा तक विद्यालयी शिक्षा प्राप्त की थी?
उत्तर – आठवीं कक्षा तक

प्रश्न 3 (मध्यम). विद्यालयी शिक्षा कम होने के बावजूद, वे किन विषयों के प्रकांड विद्वान थे? किन्हीं तीन का नाम बताओ.
उत्तर – इतिहास, दर्शन, धर्मशास्त्र, संस्कृत, पालि, उर्दू, अंग्रेजी साहित्य (कोई भी तीन)

प्रश्न 4 (कठिन). जयशंकर प्रसाद जी के व्यक्तित्व की दो मुख्य विशेषताएँ क्या थीं?
उत्तर – वे अत्यंत सौम्य, शांत एवं गंभीर प्रकृति के व्यक्ति थे. वे परनिंदा (दूसरों की बुराई करना) और आत्मस्तुति (अपनी तारीफ करना) दोनों से हमेशा दूर रहते थे.

» जयशंकर प्रसाद: साहित्यिक योगदान और प्रमुख रचनाएँ

प्रश्न 5 (आसान). जयशंकर प्रसाद की किस रचना को महाकाव्य कहा जाता है?
उत्तर – कामायनी

प्रश्न 6 (आसान). जयशंकर प्रसाद ने नाटक के अलावा और किन साहित्यिक विधाओं में लिखा है?
उत्तर – उपन्यास, कहानी, निबंध, कविता

प्रश्न 7 (मध्यम). प्रसाद जी के साहित्य में किस तरह के स्वरों की प्रमुखता है?
उत्तर – राष्ट्रीय जागरण और प्राचीन भारतीय संस्कृति के गौरव के स्वर।

प्रश्न 8 (कठिन). जयशंकर प्रसाद के किन्हीं दो उपन्यासों और दो कविता संग्रहों के नाम लिखिए।
उत्तर – उपन्यास: कंकाल, तितली। कविता संग्रह: झरना, आँसू।

» देवसेना का गीत: पृष्ठभूमि और संदर्भ

प्रश्न 9 (आसान). देवसेना का गीत किस लेखक की रचना है?
उत्तर – जयशंकर प्रसाद

प्रश्न 10 (आसान). यह गीत जयशंकर प्रसाद के किस नाटक से लिया गया है?
उत्तर – स्कंदगुप्त

प्रश्न 11 (मध्यम). हूणों के आक्रमण का देवसेना के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा?
उत्तर – हूणों के आक्रमण में देवसेना ने अपने पूरे परिवार को खो दिया, जिसमें उसका भाई बंधुवर्मा भी शामिल था।

प्रश्न 12 (कठिन). स्कंदगुप्त के प्रति देवसेना की क्या भावनाएँ थीं और स्कंदगुप्त की प्रतिक्रिया क्या थी?
उत्तर – देवसेना स्कंदगुप्त से प्रेम करती थी, लेकिन स्कंदगुप्त का मन विजया में था। जीवन के अंतिम मोड़ पर जब स्कंदगुप्त ने देवसेना को चाहा, तब तक देवसेना ने अपना जीवन त्याग और सेवा के लिए समर्पित कर दिया था, और उसने स्कंदगुप्त के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया।

» देवसेना का गीत: केंद्रीय भाव और वेदना

प्रश्न 13 (आसान). देवसेना अपने जीवन के किस पड़ाव पर खड़ी होकर यह गीत गाती है?
उत्तर – जीवन के अंतिम पड़ाव या संध्या वेला में।

प्रश्न 14 (आसान). देवसेना के प्रेम में क्या हुआ?
उत्तर – उसे अपने प्रेम में असफलता मिली, उसका प्रेम एकतरफा रहा।

प्रश्न 15 (मध्यम). गीत में देवसेना अपनी किस 'कमाई' को खो देने की बात करती है?
उत्तर – वह अपने यौवन की आशाओं, सपनों और प्रेम को 'कमाई' कहती है, जिसे उसने भ्रमवश गंवा दिया।

प्रश्न 16 (कठिन). पंक्ति 'चढ़कर मेरे जीवन-रथ पर, प्रलय चल रहा अपने पथ पर।' से कवि क्या संदेश देना चाहते हैं?
उत्तर – इस पंक्ति से कवि यह संदेश देना चाहते हैं कि देवसेना के जीवन में एक के बाद एक मुश्किलें और दुख आते गए, जैसे प्रलय (विनाश) उसके जीवन के रथ पर सवार होकर उसके साथ चल रहा हो। इसके बावजूद वह अपनी दुर्बलता के बावजूद उससे लड़ती रही।

» देवसेना का गीत: काव्य शिल्प और भाषा

प्रश्न 17 (आसान). 'देवसेना का गीत' में किस प्रकार की भाषा का प्रयोग हुआ है? एक उदाहरण दें।
उत्तर – सरल और मार्मिक भाषा। जैसे: 'वेदना मिली विदाई!'

प्रश्न 18 (आसान). कविता में 'प्रतीकात्मकता' से आप क्या समझते हैं?
उत्तर – जब कोई शब्द या चीज़ किसी गहरे विचार या भाव को दर्शाती है।

प्रश्न 19 (मध्यम). पंक्ति 'मेरे जीवन-रथ पर प्रलय चला' में 'प्रलय' किसका प्रतीक है?
उत्तर – यह देवसेना के जीवन में आने वाली घोर निराशा, दुखों और सब कुछ खो देने की स्थिति का प्रतीक है। यह सिर्फ़ बाहरी विनाश नहीं, बल्कि उसकी आंतरिक उम्मीदों और खुशियों का खत्म हो जाना भी है।

प्रश्न 20 (कठिन). 'आह! वेदना मिली विदाई!' इस पंक्ति के काव्य शिल्प और भाषा की विशेषताएँ बताइए।
उत्तर – इस पंक्ति में 'आह!' एक विस्मयादिबोधक शब्द है जो तीव्र पीड़ा, पश्चाताप और गहरी निराशा को तुरंत व्यक्त करता है। 'वेदना मिली विदाई' में 'वेदना' को किसी वस्तु की तरह 'मिलना' और फिर उससे 'विदाई' लेना–यह एक विरोधाभासी और मार्मिक चित्रण है। भाषा अत्यंत सरल होते हुए भी भावों की गहनता को छूती है, और यहीं पर काव्य शिल्प की बारीकी दिखती है। यह पंक्ति देवसेना के जीवन के सार को कुछ ही शब्दों में कह देती है।

» कार्नेलिया का गीत: पृष्ठभूमि और संदर्भ

प्रश्न 21 (आसान). 'कार्नेलिया का गीत' जयशंकर प्रसाद के किस नाटक से लिया गया है?
उत्तर – यह गीत 'चंद्रगुप्त' नाटक से लिया गया है।

प्रश्न 22 (आसान). कार्नेलिया कौन थी?
उत्तर – कार्नेलिया सिकंदर के सेनापति सेल्यूकस की बेटी थी।

प्रश्न 23 (मध्यम). कार्नेलिया भारत के किस पहलू से सबसे ज़्यादा प्रभावित हुई?
उत्तर – वह भारत के प्राकृतिक सौंदर्य, विशेषकर सिंधु तट के नज़ारों से और यहाँ की मेहमान नवाज़ी से सबसे ज़्यादा प्रभावित हुई।

प्रश्न 24 (कठिन). 'देवसेना का गीत' और 'कार्नेलिया का गीत' की पृष्ठभूमि में मुख्य अंतर क्या है?
उत्तर – 'देवसेना का गीत' देवसेना के व्यक्तिगत प्रेम, त्याग और जीवन की पीड़ा को दर्शाता है, जबकि 'कार्नेलिया का गीत' भारत के गौरवशाली प्राकृतिक सौंदर्य और उसकी उदार संस्कृति को एक विदेशी की नज़र से प्रस्तुत करता है। देवसेना का गीत आंतरिक वेदना है, कार्नेलिया का गीत बाहरी सुंदरता का बखान।

» कार्नेलिया का गीत: भारत का गौरवगान और प्राकृतिक सौंदर्य

प्रश्न 25 (आसान). कार्नेलिया कौन थी?
उत्तर – कार्नेलिया यूनानी सेनापति सेल्यूकस की बेटी थी।

प्रश्न 26 (आसान). इस गीत में भारत की किस विशेषता का वर्णन है?
उत्तर – इस गीत में भारत की प्राकृतिक सुंदरता और अतिथि-सत्कार की विशेषता का वर्णन है।

प्रश्न 27 (मध्यम). कवि ने भारत को 'मधुमय देश' क्यों कहा है?
उत्तर – कवि ने भारत को 'मधुमय देश' इसलिए कहा है क्योंकि यहाँ की प्रकृति बहुत सुंदर है, यहाँ के लोग अनजानों को भी सहारा देते हैं और हर जगह प्यार व मिठास भरी है।

प्रश्न 28 (कठिन). क्या आप सोचते हैं कि कार्नेलिया का गीत केवल भारत के प्राकृतिक सौंदर्य तक ही सीमित है? अपने उत्तर का कारण दीजिए।
उत्तर – नहीं, कार्नेलिया का गीत केवल भारत के प्राकृतिक सौंदर्य तक ही सीमित नहीं है। यह गीत भारत के मानवीय मूल्यों, जैसे अतिथि-सत्कार, सबको अपनाने की भावना और अनजानों को भी आश्रय देने की परंपरा का भी गौरवगान करता है। यह दिखाता है कि भारत सिर्फ बाहर से ही नहीं, अंदर से भी कितना सुंदर और महान देश है।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. जयशंकर प्रसाद जी ने विद्यालयी शिक्षा केवल आठवीं कक्षा तक प्राप्त की, फिर भी वे अनेक भाषाओं और विषयों के प्रकांड विद्वान कैसे बने?

› पहला कदम: हमें यह समझना होगा कि विद्यालयी शिक्षा और ज्ञान प्राप्त करना दो अलग-अलग बातें हैं.

› दूसरा कदम: प्रसाद जी ने आठवीं के बाद स्कूल भले ही छोड़ दिया, लेकिन उन्होंने 'स्वाध्याय' का रास्ता अपनाया.

› तीसरा कदम: 'स्वाध्याय' का मतलब है खुद से पढ़ना, किताबें ढूंढना, समझना और सीखना. उन्होंने संस्कृत, पालि, उर्दू, अंग्रेजी जैसी भाषाओं और इतिहास, दर्शन, धर्मशास्त्र जैसे विषयों का गहन अध्ययन अपने दम पर किया.

› चौथा कदम: उनकी यह लगन और मेहनत ही उन्हें प्रकांड विद्वान बनाने में सहायक हुई, न कि कोई औपचारिक डिग्री.

उत्तर – जयशंकर प्रसाद जी ने स्वाध्याय (self-study) के माध्यम से गहन ज्ञान प्राप्त किया, जिससे वे विद्यालयी शिक्षा कम होने के बावजूद अनेक भाषाओं और विषयों के प्रकांड विद्वान बन सके.

उदाहरण 2. जयशंकर प्रसाद जी के किन्हीं दो नाटकों और दो कहानियों के नाम बताइए।

› पहले नाटकों के नाम याद करते हैं। प्रसाद जी के नाटक अक्सर इतिहास से जुड़े होते थे।

› हाँ, 'चंद्रगुप्त' और 'स्कंदगुप्त' उनके प्रसिद्ध नाटक हैं। ये नाम आसानी से याद रह जाते हैं।

› अब कहानियों पर आते हैं। उनकी कहानियों के संग्रह के नाम भी हैं।

› उनकी कहानियों में 'आकाशदीप' और 'इंद्रजाल' बहुत मशहूर हैं।

उत्तर – जयशंकर प्रसाद जी के दो नाटक हैं 'चंद्रगुप्त' और 'स्कंदगुप्त'। उनकी दो कहानियाँ हैं 'आकाशदीप' और 'इंद्रजाल'।

उदाहरण 3. देवसेना का गीत किस नाटक से लिया गया है और देवसेना कौन थी? उसके जीवन का मुख्य संघर्ष क्या था?

› सबसे पहले, हमें यह याद रखना होगा कि जयशंकर प्रसाद जी एक नाटककार भी थे।

› यह गीत उनके प्रसिद्ध ऐतिहासिक नाटक 'स्कंदगुप्त' से उद्धृत है।

› देवसेना मालवा के राजा बंधुवर्मा की बहन थी, जो हूणों के आक्रमण में अपना परिवार खो चुकी थी।

› उसका मुख्य संघर्ष स्कंदगुप्त के प्रति एकतरफ़ा प्रेम, देशसेवा का व्रत और जीवन की अंतिम वेला में मिली निराशा और वेदना थी।

उत्तर – देवसेना का गीत जयशंकर प्रसाद के नाटक 'स्कंदगुप्त' से लिया गया है। देवसेना मालवा के राजा बंधुवर्मा की बहन थी, जिसने देश पर हूणों के आक्रमण के कारण अपना परिवार खो दिया था। उसके जीवन का मुख्य संघर्ष स्कंदगुप्त के प्रति एकतरफ़ा प्रेम में मिली निराशा और राष्ट्रसेवा के प्रति उसका समर्पण था, जिसके कारण उसे अंत में गहरी वेदना मिली।

उदाहरण 4. देवसेना के गीत में 'आह! वेदना मिली विदाई!' पंक्ति का केंद्रीय भाव स्पष्ट कीजिए।

› पहले इस पंक्ति को समझो। 'वेदना मिली विदाई' का अर्थ है कि जीवन के अंत में उसे केवल दुख ही मिला है, और वह इस दुख के साथ विदा ले रही है।

› अब इसे देवसेना के जीवन संदर्भ से जोड़ो। उसने स्कंदगुप्त से प्रेम किया, पर वह उसे नहीं मिला। उसने अपने परिवार और देश के लिए सब कुछ न्योछावर कर दिया।

› उसकी 'भ्रम-वश जीवन संचित, मधुकरियों की भीख लुटाई' वाली बात को याद करो। इसका मतलब है कि उसने अपने यौवन में जो कुछ भी इकट्ठा किया था, जैसे प्रेम, सपने, आशाएं, वो सब उसने भ्रम में ही लुटा दिए।

› तो, इस पंक्ति का केंद्रीय भाव यह है कि देवसेना अपने जीवन के अंतिम पड़ाव पर खड़ी होकर यह स्वीकार करती है कि उसका पूरा जीवन दुखों, असफलताओं और पश्चाताप से भरा रहा है। उसे अपने प्रेम में और अपने जीवन के निर्णयों में सिर्फ हार और निराशा ही मिली है।

› यह पंक्ति उसके जीवन की संपूर्ण त्रासदी और गहरे आंतरिक दर्द को व्यक्त करती है।

उत्तर – इस पंक्ति का केंद्रीय भाव देवसेना के जीवन की गहरी निराशा, प्रेम में असफलता और युवावस्था में की गई भूलों का पश्चाताप है। उसे लगता है कि जीवन के अंत में उसे केवल वेदना (दुख) ही मिली है।

उदाहरण 5. 'देवसेना का गीत' में 'श्रमित स्वप्न' और 'प्रलय' जैसे शब्दों के प्रयोग का क्या महत्व है?

› पहले 'श्रमित स्वप्न' को समझो: 'श्रमित' मतलब थका हुआ। देवसेना के स्वप्न क्या थे? स्कंदगुप्त से प्रेम, देश सेवा। ये सब पूरे नहीं हुए, बल्कि उसे थका दिया, उसके सपनों को चूर कर दिया।

› अब 'प्रलय' को देखो: 'प्रलय' मतलब सब कुछ खत्म हो जाना। देवसेना के लिए प्रलय सिर्फ़ बाहरी विनाश नहीं था, बल्कि उसके अंदर का सब कुछ, उसके सपने, उसकी उम्मीदें, सब बिखर गए थे।

› दोनों शब्दों का महत्व: ये शब्द देवसेना की आंतरिक पीड़ा, उसकी हार और जीवन की निराशा को गहराई से दिखाते हैं। 'श्रमित स्वप्न' उसकी व्यर्थ कोशिशों का प्रतीक है और 'प्रलय' उसकी टूट चुकी दुनिया का। कवि ने इन प्रतीकात्मक शब्दों से ही देवसेना के दर्द को बहुत मार्मिक बना दिया है।

› भाषा की सरलता: प्रसाद जी ने भारी-भरकम शब्दों की बजाय, ऐसे सहज शब्दों का प्रयोग किया है जो सीधे दिल को छूते हैं, लेकिन उनके अर्थ बहुत गहरे हैं। यह उनकी भाषा का कमाल है।

उत्तर – 'श्रमित स्वप्न' देवसेना की व्यर्थ कोशिशों और टूटे सपनों का प्रतीक है, जबकि 'प्रलय' उसके जीवन के पूर्ण विनाश और गहन पीड़ा को दर्शाता है। ये शब्द प्रतीकात्मक रूप से देवसेना की आंतरिक वेदना और निराशा की गहराई को व्यक्त करते हैं, जिससे कविता का भाव और अधिक मार्मिक हो जाता है।

उदाहरण 6. जयशंकर प्रसाद के नाटक 'चंद्रगुप्त' में 'कार्नेलिया का गीत' क्यों शामिल किया गया है?

› पहला कदम, यह समझना है कि कार्नेलिया सिकंदर के सेनापति सेल्यूकस की बेटी थी और वह भारत आई थी।

› दूसरा कदम, कार्नेलिया ने भारत की प्राकृतिक सुंदरता, जैसे सिंधु नदी के किनारे का वातावरण, और यहाँ की संस्कृति को अनुभव किया।

› तीसरा कदम, इस गीत के माध्यम से प्रसाद जी ने एक विदेशी महिला की नज़र से भारत के गौरव, उसकी 'मधुमय' प्रकृति और 'अनजान को सहारा' देने की परंपरा को दिखाया है।

› चौथा कदम, यह गीत नाटक में भारत की महानता को स्थापित करता है और एक सांस्कृतिक पहचान देता है, जो नाटक के मुख्य विषय को और गहरा करता है।

उत्तर – 'चंद्रगुप्त' नाटक में 'कार्नेलिया का गीत' भारत की अतुलनीय सुंदरता, उसकी समृद्ध संस्कृति और मेहमान नवाज़ी को एक विदेशी दृष्टिकोण से प्रस्तुत करने के लिए शामिल किया गया है, ताकि नाटक में भारतवर्ष की गरिमा और विशिष्ट पहचान को उजागर किया जा सके।

उदाहरण 7. कार्नेलिया को भारत देश 'मधुमय' क्यों लगता है?

› पहला, 'मधुमय' का अर्थ समझो: मधु यानी शहद, जो मीठा और आकर्षक होता है। तो 'मधुमय' मतलब मीठा, सुंदर, मन को मोह लेने वाला।

› दूसरा, कार्नेलिया भारत में क्या-क्या देखती है? वह यहाँ की सुबह की किरणें, पेड़-पौधे, नदियाँ, झरने, और सबसे ज़रूरी, यहाँ के लोगों का प्रेमपूर्ण व्यवहार और अतिथि-सत्कार देखती है।

› तीसरा, इन सभी चीज़ों को जोड़कर सोचो। एक विदेशी लड़की के लिए, भारत का प्राकृतिक सौंदर्य, यहाँ के शांत और सहायक लोग, और उसकी संस्कृति की मिठास उसे यह देश 'मधुमय' अनुभव कराती है।

› तो हम कह सकते हैं कि प्रकृति की छटा, मानवीय रिश्तों की गर्माहट और यहाँ की शांतिपूर्ण जीवनशैली, ये सब मिलकर भारत को कार्नेलिया के लिए 'मधुमय' बना देते हैं।

उत्तर – कार्नेलिया को भारत का प्राकृतिक सौंदर्य, यहाँ के लोगों का अपनापन और अतिथि-सत्कार, और यहाँ की शांतिपूर्ण जीवनशैली 'मधुमय' लगती है, जो उसके मन को मोह लेती है।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• उनके व्यक्तित्व की विशेषताओं पर आधारित प्रश्न अक्सर बोर्ड परीक्षा में पूछे जाते हैं, जैसे 'वे परनिंदा और आत्मस्तुति दोनों से सदा दूर रहते थे', इसे याद रखना.

• प्रसाद जी की प्रमुख रचनाओं, विशेषकर 'कामायनी', 'चंद्रगुप्त', 'कंकाल', 'ध्रुवस्वामिनी', 'आकाशदीप' के नाम और उनकी विधाएँ (जैसे महाकाव्य, नाटक, उपन्यास, कहानी) याद रखना बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत ज़रूरी है. अक्सर एक या दो नंबर के प्रश्न सीधे यहीं से आते हैं.

• बोर्ड परीक्षा में, 'देवसेना का गीत' के प्रसंग और उसके ऐतिहासिक संदर्भ को समझाना बहुत ज़रूरी है। सिर्फ़ गीत का भावार्थ लिखने से पूरे अंक नहीं मिलेंगे, आपको यह भी बताना होगा कि यह किस नाटक से है, देवसेना कौन थी और उसके जीवन की क्या परिस्थितियाँ थीं।

एक नज़र में रिवीज़न

› प्रसाद जी: काशी में जन्म, आठवीं तक पढ़ाई, स्वाध्याय से प्रकांड विद्वान.

› प्रसाद जी: बहुमुखी प्रतिभा के धनी, राष्ट्रीय जागरण के अग्रदूत, प्रमुख रचनाएँ (कामायनी, चंद्रगुप्त, कंकाल).

› देवसेना का गीत: 'स्कंदगुप्त' नाटक से; प्रेम में निराशा, राष्ट्रसेवा, जीवन की वेदना।